रविवार, दिनाँक **01-10-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जय हो जय हो, जय हो जय हो, जय हो जय हो ।

साजन एक पर नाम अनेक।।

कोई ओ३म् कहे, ओ३म्-कार ओ३म् कहे......... ओ३म्-कार, ओ३म्-कार।

कोई उसको अपर अपार कहे............अपरंपार, अपरंपार।।

सतयुग दर्शन साजन को कोई।

नेहकलंक अवतार कहे ....अवतार, अवतार।।

साजन एक पर नाम अनेक।

साजन एक पर नाम अनेक।।

भजन

मन नूं भावन जी, मन नूं भावन जी रघुनाथ जी दे सांवले चरण।।

शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, महाबीर जी चरणां विच बाहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई गावे कोई ताल बजावे, नारद जी बीन बजावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जंगलां विच धूनियां लावे, कोई सिर ते जटा वधावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जावे गंगा कोई जावे जमना, कोई चारे धाम पये धावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

काम क्रोध नू भैणां परे हटाओ, रघुनाथ जी सांवले चरण दिखावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

मैं दासी तुहाडे चरणां दी प्यारी, ए चरण ह्रदय विच राहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

सजनों अब तक जो भी बुला है या सुना है, अगर आपने उसे ध्यान से समझा हो तो आप जान गये होंगे कि सभी सुरतों का साजन एक ही है। इस बात से यह सन्देश मिलता है कि अनेक नामों में मत उलझो और अपने-अपने पन्थ मत चलाओ। इसके स्थान पर 'सर्व-व्यापक भगवान है' इस सत्य को स्मृति में रखते हुए सभी सुरतों को सम मानो व जानो। मान लो कि सभी सुरतों का साजन एक ही है। इस तथ्य के दृष्टिगत कदाचित् भिन्नता का भाव मत अपनाओ। जानो ऐसा करने पर ही सजनता का भाव अन्तर्घट में स्थित होगा और मन में उतरेगा। तभी जीवन आनन्दप्रदायक बन पायेगा और आप अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओगे। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि इस सत्य को दृष्टिगत रखते हुए अपने अन्दर स्वाभाविक बदलाव ले आओ। अनेक नामों में मत उलझो। इन्हीं उलझनों के कारण आज का मानव अपने-अपने मत-मतान्तर चलाकर अलगाववाद फैला रहा है और अन्यों पर प्रभुत्व जमा रहा है। जानो यह कुल सृष्टि के लिए अत्यन्त नुक्सानदायक स्थिति है। इस स्थिति को देखकर हम मूक नहीं रह सकते

क्योंकि यह सृष्टि सबकी सांझी है। जिस प्रकार कुदरत की वाणी सबकी सांझी है उसी प्रकार यह सृष्टि भी सबकी सांझी है-इस सत्य को सम्मान के साथ स्वीकारो और सृष्टि का उद्धार करने के प्रति समर्पित हो जाओ यानि इसके निमित्त अपना तन-मन-धन वारने से न सकुचाओ। जानो तभी लाभान्वित हो पाओगे अन्यथा तो क्षणिक सुखों में उलझकर हार खा जाओगे और अधर्मी बन जाओगे। याद रखो जो भी अधर्मी होता है उसके आचरण से स्पष्ट होता है कि इसे सत्यज्ञान नहीं है यानि यह नहीं जानता कि सृष्टि का सत्य क्या है?

सजनों इस सन्दर्भ में आप भाग्यशाली हो क्योंकि आप तो उन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर हो जो हर प्रकार के गुणों से सम्पन्न हैं व सर्व-समर्थ हैं। वह ही तो समय अनुसार हमें सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित भजनों/कीर्तनों के माध्यम से सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, सम, निष्काम, परोपकार जैसे दिव्य गुण धारणे के लिए प्रेरित कर रहे हैं। अब नीति अनुसार जिसके द्वारे पर आप हो, उनका कहना तो मानना बनता है। इसके विपरीत उनके वचनों के विरुद्ध चलना हानिकारक सिद्ध होता है। इस परिप्रेक्ष्य में अपने अपने जीवन को देखो और समझो कि अब तक ऐसी भूल करके आप जीवन में कितनी हानि उठा चुके हो और कितना सुख-चैन गँवा चुके हो? सजनों यदि अभी भी अपने से, अपने परिवारों से व समाज के प्रति थोड़ा सा भी स्नेह है तो समझदारी में आकर तुरन्त स्वाभाविक परिवर्तन कर लो और सतयुगी इन्सान बन जाओ यानि आपका ख़्याल-ध्यान सत्य में स्थित हो जाए। जानो ऐसा समर्थवान इन्सान बनने हेतु आत्मिकज्ञान प्राप्त करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है। इस तथ्य के दृष्टिगत अपने जीवन का बचा हुआ समय आत्मिकज्ञान प्राप्ति में लगा दो और इस हेतु अपने ख़्याल और ध्यान को दुनियाँ से हटाकर आत्म-स्वरूप में इस तरह स्थित कर दो कि आपका हृदय प्रकाशित हो उठे। इस प्रकार आपके लिए 'ख़्याल ध्यान वल, व ध्यान प्रकाश वल' कर आत्मिकज्ञान प्राप्त करना सहज हो जाए। इस सन्दर्भ में

मानो कि अज्ञान अन्धकार है। अतः इस अज्ञान अन्धकार में अपने ख़्याल को मत धकेलो।

जानो उपरोक्त भजन में भी सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि यह जो हमारा मन है उसे केवल रघुनाथ जी के साँवले चरण ही भाते हैं यानि उनके विचार ही प्रिय लगते हैं। हक़ीकत में सजनों विचार ही मन को सशक्त बनाने वाली असली ख़ुराक है। अतः इन विचारों को ग्रहण कर आत्मिकज्ञान प्राप्त कर लो और उसी में अपने मन को ठहराओ। जानो तभी मन संकल्प-विकल्प रहित व बुद्धि तीक्ष्ण हो पायेगी। ऐसी अवस्था में ही चित्त प्रसन्न हो जाएगा और आत्म साक्षात्कार होगा यानि हम जान जाएँगे कि हम कौन हैं। स्पष्ट है सजनों जब मन-मन्दिर में प्रकाश हो जाता है तो उसमें शोभित सब सुरतों का साजन नज़र आ जाता है। ऐसा होने पर ठीक वैसे ही सुरत प्रसन्न हो जाती है जैसे एक सांसारिक स्त्री पति को पाकर प्रसन्न हो उठती है। फिर शब्द-सुरत का खेल चलता है और उस खेल के माध्यम से उनका एकीकरण यानि एकरूपता हो जाती है और कोई भिन्न-भेद नहीं रहता। जब ऐसा हो जाता है तो फिर घर-परिवार व संसार का रूप ही अलग हो जाता है क्योंकि तब जीवन के वास्तविक आनन्द का अनुभव हो जाता है।

सजनों इस सन्दर्भ में मानो कि मानव जीवन दुर्लभ मिलता है। जो वस्तु दुर्लभ मिले उसकी तो कद्र करनी ही चाहिए ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से पहले ही कहीं आपका साथ न छोड़ दे। इस तथ्य के दृष्टिगत मन को अपना साथी बनाने हेतु उसे संकल्प रहित अवस्था में साधो ताकि वह आपको जीवन के उन्नति-पथ पर प्रशस्त करने के लिए सदा तत्पर रहे। आशय यह है कि वह आपकी सुरत/ख़्याल को सदा ऊपर उठाये। निःसन्देह इसके लिए आपको अन्तर्मुखी होना होगा अन्यथा ख़्याल बहुर्मुखी होकर इन्द्रिय-रस में उलझ जाएगा। ऐसा होने पर मन में दुनियावी विचार उठने लगेंगे और आप बौद्धिक तौर पर

परेशान रहने लगोगे। नतीजा शारीरिक-मानसिक तौर पर रोगी हो जाओगे। ऐसा इन्सान कदाचित् परमार्थ के रास्ते पर अग्रसर होने के योग्य नहीं रहता। आप सजनों की हालत भी हम समझ सकते हैं क्योंकि आपके संसारी पालनहारों ने ही आपकी ऐसी दशा कर दी जिसके कारण आप कठिन अवस्था को प्राप्त हो गये हो। अब जो त्रुटि आपके आभिभावकों से हुई, वह आपसे न हो, इस हेतु आपको सुमति में आना होगा और शास्त्र-विहित आत्मज्ञान धारण करना होगा। यहाँ याद रखो कि आत्मज्ञान प्राप्त करने में वही समर्थ हो सकता है जो अपने दिल और दिमाग़ यानि तन-मन-धन को समर्पित कर देता है। अन्य शब्दों में जो अपनी 'मैं' को समर्पित कर अपनी मन शान्त कर लेता है, वह ही आत्मज्ञान प्राप्त कर पाता है। इस आत्मज्ञान को प्राप्त करने के उपरान्त फिर उसे दुनियावी जो भी लिखा हुआ है या उनकी मत है, उसे पढ़ने, सुनने व समझने की आवश्यकता ही नहीं रहती। यहाँ याद रखो कि मानवता में स्थिरता से बने रहने के लिए किसी अन्य की मत को सुनने-पढ़ने की जरूरत नहीं क्योंकि यह तो दूसरों की मत पर चढ़कर खुद बिगड़ने की बात है। सो अपने साथ ऐसा मत होने दो। इसके स्थान पर जो मत श्री साजन जी से प्राप्त हो उसे ही मोक्ष व परमानन्द प्रदायक मानकर उसी का अनुकरण करना ताकि मन की शान्ति व सुख प्राप्त हो। इस सन्दर्भ में मान लो कि इधर-उधर भटकना बेकार है। बाल-अवस्था के भक्तिभावों पर चलना भी व्यर्थ है क्योंकि अब समय अनुसार सतयुग का आगमन हो रहा है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों भविष्य में जो होने वाला है, उसके प्रति हमें अपने आपको आज ही तैयार करना है अन्यथा विनाश हो जायेगा। अगर इस विनाश से बचना चाहते हो तो अपनी अजर-अमर हस्ती को पहचान अपने परमात्म स्वरूप में स्थित हो जाओ। यहाँ याद रखो कि हम सृष्टि की आत्मा हैं, हम हैं तो सृष्टि है। यह है 'ईश्वर अपना आप' के विचार पर खड़ा होना। इस विचार पर खड़ा होने के लिए कुछ भी कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाओ। समझ आई सबको बात?

'हाँ जी'।

सजनों अगर समझ आ रही है तो फिर निश्चय लो कि मुझे खुद में स्वाभाविक परिवर्तन लाना है और इस हेतु जो कुछ भी त्यागना पड़े उससे नहीं सकुचाना। इस सन्दर्भ में यदि यह निश्चय लेना चाहते हो तो अभी और इसी वक्त सच्चे दिल से आत्म-समर्पण करने के लिए तत्पर हो जाओ। समय की गति को देखते हुए यह मौका फिर दोबारा नहीं मिलेगा। यहाँ आत्म-समर्पण से तात्पर्य कुदरती शास्त्र विहित जो है उसको धारण करने से है ताकि मन को अपनी पसन्द की ख़ुराक ज्ञानरूप में प्राप्त होती रहे और वह सदा प्रसन्न व शान्त रहे। यकीन मानो मात्र इतना यत्न करने से जीवन आसान हो जाएगा और लक्ष्य प्राप्त करना कठिन नहीं रहेगा। इस तरह सहजता से ही मोक्ष प्राप्त कर जन्म की बाज़ी जीतने के काबिल बन जाओगे। यह है अक्षय यश कीर्ति को प्राप्त करना। सो सजनों अगर त्रिलोकी की कुर्सी पर विराजमान होना चाहते हो तो हिम्मत दिखाओ और इस मंगलकारी परिवर्तन को लाने के लिए शास्त्र के आगे आत्म-समर्पण कर दो। कहने का आशय यह है कि जो शास्त्र कह रहा है केवल वह करना आरम्भ कर दो और इस तरह शास्त्र विहित विचारों को अपनी स्मृति में कर लो। याद रखो अगर उन्हें स्मृति मे कर पाओगे तो ही सबको बता पाओगे कि कुदरत के वे नीति-नियम क्या हैं जिनके अनुसार अपने भाव-स्वभाव ढालने हैं। निश्चित ही इस कार्य को सिद्ध करने के लिए हमें काबिल बनना ही होगा तभी कुदरत का सन्देश हम जन-जन तक पहुँचा पायेंगे और अपना उपकार करते हुए परोपकार भी कमा पायेंगे। सो आज आपके लिए मौका है। जो घरों में बैठे हैं वो भी सुन लें कि घरों में बैठकर समभाव-समदृष्टि के सबक़ को नहीं समझ सकोगे। इस हेतु घर से बाहर निकलना होगा और ध्यान-कक्ष में आत्मिकज्ञान की जो कक्षाएँ लग रही हैं उन्हें नियमित रूप से अटैण्ड करना होगा। कोई भी मज़बूरी आपको ऐसा करने से रोक न पाए, इसका आपको ध्यान रखना होगा। सो सब अगले हफ्ते से घरों के प्रबन्ध अच्छे से कर लेना और अफुर होकर आना। जानो ऐसा करने पर ही समभाव-समदृष्टि के स्कूल से प्राप्त हो रहे कदम-कदम पर विचार शब्द को पकड़ पाओगे।

विचार को यदि पकड़ लिया तो उससे प्यार हो जाएगा और आपके जीवन का रास्ता सवलड़ा हो जाएगा। तो क्या आप अपनी भलाई नहीं चाहते? क्या अपने जीवन के रास्ते को सुगम नहीं बनाना चाहते?

'मौन'।

जानो ऐसा करना तो अपने साथ आप वैर कमाना है और यह कलुषित बुद्धि की निशानी है। ऐसा मत करो क्योंकि अब कुर्बानी का समय है। अतः सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मज्ञान की विचारधारा के आगे समर्पित होकर उसे धारणे में तत्पर हो जाओ। जानो यही यथार्थ जीवनदायक ज्ञान है। इस ज्ञान को धारण करने से मौत का नामोनिशान नहीं रहता। तो क्या आप ऐसा करने के लिए तैयार हो?

'हाँ जी'।

तो फिर किसी के पीछे भागने की जरूरत नहीं रहेगी। किसी गुरु को धारणे की आवश्यकता नहीं रहेगी। किसी का लिखा हुआ पढ़ने की जरूरत नहीं रहेगी। याद रखो ऐसा करना समय बर्बाद करने की और अनीतियाँ अपनाने की बात है क्योंकि वे ज्ञान अपने आप में परिपूर्ण नहीं है। याद रखो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी परिपूर्णता के प्रतीक हैं। वह अजर-अमर दाता ही परिपूर्ण ज्ञान प्रदान कर सकते हैं। अतः उनका संग-साथ करो और उनके वचनों पर स्थिरता से बने रहो। क्या तैयार हो ऐसा करने के लिए?

'हाँ जी'।

तो फिर समर्पण के भाव पर मज़बूत हो जाओ। जानो यह बहुत बड़ा त्याग है और महान लाभ को प्राप्त करने के निमित्त है। इस लाभ को प्राप्त होने वाला निश्चित रूप से मालोमाल हो जाएगा और स्वतन्त्र बुद्धि और स्वतन्त्र ख़्याल हो आत्म-निर्भर इन्सान बन जाएगा। जानो आत्म-निर्भर इन्सान ही आत्म-विश्वासी होता है

और वह ही सब कुछ समर्थता से कर पाता है। आप भी ऐसा सामर्थ्यवान इन्सान बनने हेतु बोलोः-

'हे सभी सुरतों के साजन ! अभी के पश्चात् आप जो ज्ञानरूप में हमें प्रदान कर रहे हो, हम उसी का चिन्तन मनन करते हुए तद्नुरूप ही जीवन-व्यवहार अपनाएँगे। इस तरह हम शारीरिक भाव-स्वभावों को छोड़कर आत्मीयता से परिपूर्ण भाव-स्वभाव निष्कामता से अपनाकर परोपकारी नाम कहायेंगे।'

ऐसा बनने हेतु अब ध्यान से शीश अर्पण की महत्ता सुनोः-

शीश अर्पण

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

समभाव समदृष्टि दा स्कूल खोलने लगे, कोई विरला दाखिल होवेगा।

खोलेगा ओ जगत दा वाली, ओथे फ़ीस नहीं जे कोई।।

सीस अर्पण करके ते कोई, उस शब्द ते ओ खलोवेगा।

उस शब्द ते ओ खलोवेगा, उस शब्द ते ओ खलोवेगा सजन।।

इस संदर्भ में आओ समभाव-समदृष्टि के सबक़ पर खड़ा होने हेतु आज शीश अर्पण का महत्व जानें। जानो शीश अर्पण का अर्थ है - बगैर किसी दबाव के, ख़ुशी से अपने आप को समर्पित करना अर्थात् अपनी आहुति देना, अर्पित होना, कुरबान होना, जान लुटाना, जीवन देना। जैसा कि कहा भी गया हैः-

अपने शीश को अर्पण करना है अर्थात

अपने आप को खोकर इस स्कूल में प्रवेश करना है।

शीश अर्पण की यह क्रिया शारीरिक और संसारी अभिमान/अहंकार, अकड़, धृष्टता, प्रतिष्ठा, अवज्ञा, स्वीकृति-अस्वीकृति, मान-अपमान, इच्छा-अनिच्छा, राग-द्वेष, वैर-विरोध, ज्ञान-अज्ञान इत्यादि का त्याग कर, ईश्वरीय हुक्म को सर्वोपरि मानने की क्रिया है यानि असत्य को छोड़ कर, सत्य को धारने अथवा अंगीकार करने की क्रिया है।

उपरोक्त के संदर्भ में हुकम से तात्पर्य सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में शब्द ब्रह्म विचारों के रूप में विदित, कुदरती नैतिक संविधान व आचार-संहिता की पालना से है। अतः आत्मकल्याण हेतु यह आज्ञापालन धर्मभाव व पूरी निष्ठा से, समर्पित होकर श्रद्धापूर्वक करना चाहिए तथा इसकी पालना के निमित्त अपना तन-मन-धन वारने से भी नहीं सकुचाना चाहिए। जैसा कि कहा भी गया है:-

जन्म अपने नाल वैर न कमावीं। जन्म अपना सफ़ल बनावीं।।

तन मन अर्पण करो जरूर। तन मन अर्पण करो जरूर।।

जानो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार, एक वैरागी की भांति, सांसारिक विषयों और पदार्थों से मिलने वाले क्षणिक सुखों व स्वार्थपरता की भावना को त्याग कर, ईश्वरीय हुक्म यानि रज़ा के आगे स्वेच्छा से शीश झुका कर, उसकी पालना करने पर ही, मन में निरन्तर उठने वाली संकल्प-विकल्प की तरंगें, शांत हो सकती है और हम हर प्रकार के तर्क-वितर्क, द्वन्द्व-प्रतिद्वन्द्व, प्रतिरोध-प्रतिस्पर्धा, वाद-विवाद

आदि से छुटकारा पा, बिना किसी यत्न के मन की चंचलता पर फतह पा, संतोषी व धैर्यवान बन सकते हैं। यही नहीं तभी हम कुदरती हुक़्म की रमज़ समझ, सच्चाई-धर्म की राह पर, निष्कामता से आगे बढ़ने का पराक्रम दर्शा सकते हैं और इस जगत में निर्लिप्तता से विचरते हुए निर्भयता पूर्वक परोपकार कमा सकते हैं यानि ईश्वर की चरण-शरण में निश्चिंतता से सुरक्षित बने रहे, चिरस्थाई शांति व विश्राम को पा सकते हैं। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों कहा गया हैः-

तन मन अर्पण करे जो मेरे, उसदा मैं रखवाला हां, उसदा मैं रखवाला हां।।

सरल शब्दों में कहे तो शीश अर्पण यानि आत्मसमर्पण की इस क्रिया द्वारा ही हमारी चेतना ऊर्ध्वमुखी, वृत्ति-स्मृति व भाव-स्वभाव निर्मल तथा बुद्धि विवेकशील हो सकती है और हम आत्मज्ञान प्राप्त कर, अपने मन को अधिकार में रखते हुए, आत्मा में लीन होने का सुख अनुभव कर सकते हैं। आशय यह है कि इसी क्रिया द्वारा ही जीवन के समस्त विरोधी दुर्भावों, प्रवृत्तियों व नकारात्मक विचारों के साथ-साथ व्यक्तिगत 'हौं-मैं' यानि 'मैं हूँ' या कर्त्तापन के अभिमान या ख़ुदगर्ज़ी की भावना का विसर्जन हो सकता है और हम अफुरता से आत्म साक्षात्कार कर यानि अपने यथार्थ ज्ञान, गुण व शक्ति से परिचित हो शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक रूप से सुदृढ़ हो सकते हैं।

जानो जो इस प्रकार अपने जीवनकाल के दौरान, ईश्वरीय हुकम की पालना के निमित्त पूर्णतया समर्पित हो, सर्वत्र परमेश्वर को प्रतिष्ठित करता है वह ओजस्वी व तेजस्वी इंसान ही, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित 'समभाव नज़रों में कर सजन वृत्ति फड़ियो, सजन भाव नज़रों में करके सजनो, सजन भाव प्रकृति में लियाईयो' की युक्ति को पूर्णतः प्रवान करने के योग्य बन समदृष्टि हो सकता है

और सत्-वादी बन, एकता, एक अवस्था में आ यश-कीर्ति प्राप्त करने का अधिकारी बन सकता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों यदि आप भी समभाव-समदृष्टि होना चाहते हो तो बिना मनमत लगाए या तर्क-वितर्क किए, तहे दिल से अपने जीवन की बागडोर आत्मेश्वर को सौंप, उसके हुकम की पालना पर अपना सर्वस्व निछावर कर दो और फिर बोलो :-

मैं अपनी खुशी से व निष्काम भाव से अपने आप को ईश्वरीय आज्ञा के पालन के निमित्त समर्पित करता हूँ।

इस हेतु मैं स्वेच्छा से अपने निजी स्वार्थ, सांसारिक सुखों, मनोकामनाओं, अहंकार, प्रतिष्ठा, मान-अपमान, ज्ञान-अज्ञान इत्यादि संकीर्ण मनोभावों का त्याग करता हूँ और एक आज्ञाकारी/मननकार सुपुत्र की भांति कर्त्तव्यबोध की भावना से प्रेरित होकर, उस ईश्वर के शास्त्रविहित् ब्रह्म विचारों को हर हाल में अंगीकार करने का प्रण लेता हूँ।

सजनों इस संदर्भ में हमारे परमपिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का आदर्श हम सबके सम्मुख ही है जिन्होंने पूर्ण श्रद्धा भाव से अपने इष्ट के सम्मुख आत्मसमर्पण कर, हर स्थिति में कठिनाईयों व बाधाओं की परवाह किए बगैर उनके हुकम यानि शब्द ब्रह्म विचारों की दिल से पालना करी और हर कार्य सिद्ध कर दिखलाया। परिणामतः परमेश्वर की कृपा व भक्ति-शक्ति की ताकत से उन्होंने सर्वोच्च अमर पद प्राप्त किया और उनके द्वारा प्रतिपादित आचार-विचार व व्यवहार की शैली, श्रेष्ठतम मार्गदर्शन के रूप में सबके लिए अनुकरणीय बन गई।

आप भी सजनों उन सर्वमहान दाता की चाल पड़, समर्पित भाव से यानि मन-वचन-कर्म से अपने इष्ट के आगे अर्पित हो जाओ और सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित उनके प्रत्येक आदेश यानि गुरुमत की पालना के प्रति अपना तन-मन-धन वारने से मत सकुचाओ। जानो ऐसा करने में ही हमारी, हमारे परिवार की व कुल समाज की भलाई है और इसी द्वारा हम सहजता से अपना आप पछान कर, अमर पद प्राप्त कर सकते हैं।

सजनों इस लेख द्वारा आपको हर पहलू से शीश अर्पण की महत्ता समझा दी गई है। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

'शीश मिटेया तां शौह मिलया, तां वी सस्ता जान'

अर्थात यह खरा सौदा है और अपने आप में मनमत छोड़ गुरुमत अनुसार जीवन-व्यवहार करने की सकारात्मक बात है। सो ऐसा पुरुषार्थ दिखाकर अपना अन्तःकरण विशुद्ध अवस्था में ले आओ। यदि अन्तःकरण विशुद्ध हो गया तो आप अन्दरुनी वृत्ति अनुसार स्थिरता से अपना जीवन निर्विकारिता से सम्पन्न करने में समर्थ हो जाओगे। ऐसा होने पर बैहरुनी वृत्ति से कोई नकारात्मकता आपके भीतर प्रवेश नहीं कर सकेगी। इस तरह सुरत अपने घर में स्थित हो जाएगी और इन्द्रिय सुख उसे कदापि नहीं सतायेंगे। अब सजनों इन्द्रिय-निग्रही बनना चाहते हो तो इस नगरी से अपना मन आज़ाद कर लो। याद रखो इन्द्रिय सुखों में फँसना जगत में फँसने की बात है। ऐसा मत होने देना अपितु अपने जीवन को अपने अधिकार में रखना। वैसे भी यदि एक ईश्वर के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया तो फिर किसी और के प्रति उसे समर्पित करना अपने आप में बहुत बड़ा ग़ुनाह व पाप है। आपके द्वारा किसी से ऐसा छल न हो इस हेतु खुद पर कड़ा पहरा

रखना, तभी सफल हो पाओगे। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि हर इन्सान अपने जीवन का कारज सिद्ध करने हेतु समर्थ है। उस समर्थता का एहसास करो और खुद पर विश्वास करो कि मैं ईश्वर की हर आज्ञा का पालन सहर्ष कर सकता हूँ। यह होगा अमर आत्मा के भाव से निर्भय होकर इस जगत में विचरना। आपको इसी सत्य-परायण अवस्था में विचरना है क्योंकि आत्म-स्वरूप में स्थित रहने की यही निशानी है। अब यदि ऐसा करना चाहते हो तो फिर कह रहे हैं कि समभाव-समदृष्टि के स्कूल में गैर हाज़िर रहने की गुस्ताख़ी मत करना। जो घरों में बैठे हैं उन्होंने भी इस क्लास को अटैण्ड करना है और अन्य सजनों को भी साथ मिलाने की कोशिश करनी है। हर हाल में इस कार्य को प्राथमिकता दो तभी सजनता के प्रतीक बन पाओगे अन्यथा क्या होगा, वह इस कीर्तन के माध्यम से ध्यान से सुनोः-

जिस जगह पर श्री साजन जी बैठते थे, बैठे ही थे कि बारी वाली जगह डोलने लगी तो थोड़े दिनों के बाद यह कीर्तन महाबीर जी ने दिया।

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

श्री रामचन्द्र जी दी माया, माया ने खेल है रचाया।

माया ने खेल है रचाया, माया ने खेल है रचाया।।

श्री रामचन्द्र जी दी माया, माया ने खेल है रचाया।

माया ए है जे बड़ी प्रवीन साजन जी कर लवो ए यकीन।।

हो जाओ रामचन्द्र दे आधीन, महाबीर जी ने ए फरमाया है।

ए धुरों सन्देशा आया है, ए धुरों सन्देशा आया है।

महाबीर जी ने ए फरमाया है, ए धुरों सन्देशा आया है।

हो हो हो हो बिगल बजसी बिगल पुरे दा।।

महाबीर जी रहे ने पुकार श्री राम रटो।

महाबीर जी रहे ने पुकार श्री राम भजो।।

राम रटो श्री राम भजो राम रटो श्री राम भजो।

इक श्वास न जावे खाली, श्री राम रटो।।

श्वास न जावे सजनों, श्वास न जावे ओय।

इक श्वास न जावे खाली, श्री राम रटो।

राम रटो श्री राम भजो, राम रटो श्री राम भजो।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

ए है जे यह मेरी माया, माया ने खेल है रचाया।

सदैव गोदी दे विच राहवो, माया दे वस न आवो।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए है जे यह मेरी माया, माया ने खेल है रचाया।।

कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा।

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।

ए शक्ति खड़ी जे तैयार, कलुकाल दे करन नू संहार।

ए कौतुक ही ओ देखन गे ओ देखन गे निष्कामी ओ यार।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।

साडी गोदी दे विच राहवो तुसां जरा ना घबराओ।

कई वारी सृष्टि उपजे बिनसे, घड़ा भन्नण घड़न दा है व्यवहारो।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।

देखो शक्ति दा हथियार उसने करना है जे शिकार।

पापी देसी सारे ओ मार ना बचे रावण जये ओ यार।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।

इस कीर्तन के भावार्थों को दृष्टिगत रखते हुए हमने मानना है कि कलियुग की अब दुर्दशा होने वाली है। इससे बचने हेतु आत्म-समर्पण कर सदैव ईश्वर की गोदी में स्थित बने रहना होगा, इसी में हमारा बचाव है। सो समभाव-समदृष्टि की युक्ति को धारणे हेतु आत्म-समर्पण का महत्त्व कभी मत भूलना। इस युक्ति को ध्यान-कक्ष से बड़े ध्यान से समझो और सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए जीवन-लक्ष्य प्राप्त कर लो।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।